रजिस्ट्री सं० डी-(डी)—73

REGISTERED NO. D-(D)—73

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 36] नई दिल्ली, शनिवार, सितम्बर 6, 1975 (भाद्रपद 15, 1897)

No. 36] NEW DELHI, SATURDAY, SEPTEMBER 6, 1975 (BHADRA 15, 1897)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोटिस

NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 11 अगस्त 1975 तक प्रकाशित किए गए हैं—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 11th August 1975:—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
154.	सं० 81—आई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 4 अगस्त, 1975 No. 81-ITC (PN)/75, dated the 4th August 1975	वाणिज्य मंत्रालय Ministry of Commerce	लाइसेन्स अवधि अप्रैल, 1975 —मार्च, 1976 के लिए पंजीकृत निर्यातकों के लिए आयात नीति। Import Policy for registered exporters for the licensing period April, 1975—March 1976.
155.	सं० एफ० 2(ii)—एन० एस०/75, दिनांक 5 अगस्त, 1975 No F. 2(II) NS/75, dated the 5th August 1975	वित्त मंत्रालय Ministry of Finance	31 जुलाई, 1975 को आल इंडिया फाइन आर्टस ऐण्ड क्राफ्ट्स सोसायटी रफी मार्ग, नयी दिल्ली में डाकघर बचत बैंक की इनामी प्रोत्साहन योजना के तीसरे ड्रा के परिणाम। Post Office Savings Bank's prize Incentive Scheme result of the Third Draw held on 31st July, 1975 at all India Fine Arts and Crafts Society, Rafi Marg, New Delhi
156	सं० 33—ई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 7 अगस्त, 1975 No. 33-ETC(PN)/75, dated the 7th August 1975	वाणिज्य मंत्रालय Ministry of Commerce	निर्यात नियंत्रण प्रक्रिया नियमों तथा विनियमों में परिवर्तन/संशोधन। Changes/Amendments in the Exports Control Procedure Rules and Regulations.

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां, प्रकाशन नियंत्रक, सिविल लाईन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र नियंत्रक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Controller of Publications, Civil Lines, Delhi Indents should be submitted so as to reach the Controller within ten days of the date of issue of these Gazettes.

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
157.	सं० 82–आई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 7 अगस्त, 1975	वाणिज्य मंत्रालय	1 मार्च, 1975 से 31 अगस्त, 1975 तक की अवधि के दौरान नारियल, काजू एवं खजूरों (क्रम स० 21(ए०)(i)/IV] को छोड़कर अफगानिस्तान से सभी प्रकार के ताजे फलों का आयात।
	No. 82-ITC(PN)/75, dated the 7th August 1975	Ministry of Commerce	Import of Fresh Fruits, all sorts, excluding coconuts, cashew nuts and dates [S. No. 21(a)(i)/IV] from Afghanistan during the period from 1st March, 1975 to 31st August, 1975.
158.	सं० 83–आई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 7 अगस्त, 1975	तदैव	व्यावसायिक उपस्कर विनिर्माताओं द्वारा व्यावसायिक संघटकों का आयात।
	No. 83-ITC(PN)/75, dated the 7th August 1975	Do.	Import of professional components by Professional Equipment Manufacturers.
159.	सं० 84–आई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 8 अगस्त, 1975		अप्रैल, 1975 — मार्च, 1976 के लिए आयात नीति।
	No. 84-ITC(PN)/75, dated the 8th August 1975	Do.	Import Policy for the year April 1975—March 1976.
	सं० 85–आई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 8 अगस्त, 1975	तदैव	आयात लाइसेंस / सीमाशुल्क निकासी परमिट की आवश्यकता के बिना ही प्राणरक्षा उपस्कर का आयात।
	No. 85-ITC)/PN)/75, dated the 8th August 1975		Import of life saving equipment without the requirement of an import licence/ customs clearance permit.
160.	सं० 86–आई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 11 अगस्त, 1975	तदैव	अप्रैल, 1975—मार्च, 1976 अवधि के लिए पंजीकृत निर्यातिकों के लिए आयात नीति (संशोधन)।
	No. 86-ITC(PN)/75, dated the 11th August 1975	Do.	Import Policy for Registered Exporters for the period April, 1975-March 1976 (Amendment).

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	673
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1415
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1123
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	2487
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	3181
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	433
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	7333
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	617
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	19
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विधिक अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	1657
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिस	155

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	673
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1415
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	1153
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB. SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc., of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	2487
PART II—SECTION 3.—SUB. SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	3181
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence	433
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Officers of the Government of India	7333
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta	617
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	19
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1657
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	15

भाग I—खंड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1974

सं० 103-प्रेज/75—राष्ट्रपति निम्नांकित कार्मिकों को उनकी असाधारण कर्तव्यनिष्ठा एवं साहसपूर्ण कार्यों के लिए "सेना मैडल" दिए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1 मेजर मनोहर सिंह दयाल सिंह अडवानी (आई० सी० (18650) इंजीनियर्स।

मेजर मनोहर सिंह दयाल सिंह अडवानी 15 जुलाई, 1972 को इंजीनियर्स की एक फील्ड कम्पनी की कमान कर रहे थे और उन्हें सुरंगें साफ करने का काम सौंपा गया जो छः महीने पहले पश्चिमी क्षेत्र में बिछाई गई थी। वहां बहुत ही घने झाड़-झंखाड़ उग आए थे, बहुत-सी सुरंगें इधर-उधर हो गई थीं और उनके फ्यूज़ खतरनाक स्थिति में पहुंच गए थे। इसके अलावा अन्य यूनिटों ने सुरंग क्षेत्रों के ऊपर सुरंगें पट्टियां रख दी थीं जिनसे सुरंगों को बाहर निकालने का काम और भी खतरनाक हो गया था। साथ की सुरंगें साफ करने के काम में फील्ड कम्पनियों में, बहुत सी दुर्घटनाएं हो चुकी थीं।

मेजर अडवानी ऐसी स्थिति में सुरंग क्षेत्रों में स्वयं आगे बढ़े उन्होंने हाथ से ही सुरंगों का पता लगाया क्योंकि डिटेक्टर निकम्मे थे और सुरंगों के पहले सेट का पता लगा लेने और उसे निष्क्रिय कर देने तथा सुरंगों की पट्टियों का पता लगाकर और यह ठीक तरह समझ लेने के बाद ही कि वे किस ढंग से बिछाई गई हैं उन्होंने अपने दूसरे साथियों को यह काम करने दिया। जब भी सुरंगों का पता लगाना कठिन हो जाता वे स्वयं उनका पता लगाते और उन्हें स्वयं निष्क्रिय करने का काम अपने हाथ में ले लेते। इस संपूर्ण संक्रिया में इन्होंने अपने हाथों से 1000 से अधिक सुरंगों का पता लगाया और उन्हें निष्क्रिय किया। एक सुरंग-क्षेत्र को साफ करते समय, एक सुरंग के फट जाने से उनके हाथ और मुंह बुरी तरह से झुलस गए, लेकिन इससे वे घबराए नहीं और प्रथमोपचार के बाद फिर सुरंग-क्षेत्रों में जाकर अत्यधिक विकट और खतरनाक सुरंगों का पता लगाने और उन्हें निष्क्रिय करने के काम में जुट गए और अपने किसी अधीनस्थ कर्मचारी को इन सुरंगों को निष्क्रिय करने का काम नहीं करने दिया। इस तरह यह काम निर्धारित अवधि में पूरा हो गया।

इस संक्रिया में मनोहर सिंह दयाल सिंह अडवानी ने भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस, दृढ़-संकल्प और नेतृत्व का परिचय दिया।

2 कैप्टन महेन्द्र सिंह बेनीवाल (एस० एस० 23042) इंजीनियर्स।

कैप्टन महेन्द्र सिंह बेनीवाल फाजिल्का क्षेत्र में सुरंगें साफ करने की संक्रिया के दौरान एक इंजीनियरिंग प्लाटून की कमान कर रहे थे। यह कार्य बहुत ही कठिन और खतरनाक था। सुरंगें कहां-कहां बिछी हैं इसका कोई रिकार्ड उपलब्ध नहीं था, सुरंग क्षेत्रों में कोई बाड़ नहीं लगी हुई थी और सुरंगें किसी निश्चित क्रम में भी नहीं बिछी हुई थीं। कुछ टैंकरोधी सुरंगों में दबाव प्लेटें भी नहीं लगी हुई थीं जिसके कारण खतरा और भी अधिक हो गया था। उस क्षेत्र में कपास की फसल खड़ी हुई थी जो बहुत बड़ी हो चुकी थी और जमीन की सतह भी काफी कड़ी थी। अतः सुरंग खोजने का काम बहुत कठिन हो गया था। लेकिन कैप्टन बेनीवाल इससे घबराए नहीं और उन्होंने बड़ी आत्म-विश्वास के साथ चुनौतीपूर्ण काम को अपने हाथ में लेना स्वीकार किया। वे स्वयं सुरंग-क्षेत्र में गए, वहां निशानबन्दी की और बड़े साहस तथा व्यावसायिक दक्षता से अनेक सुरंगों को निष्क्रिय कर दिया। इनके इस कार्य से प्रेरणा पाकर, इनके जवान भी इस काम में जुट गए और उन्होंने बड़े आत्म-विश्वास और उत्साहपूर्वक यह काम किया।

14 जनवरी, 1973 को सुरंगों का साफ करते समय, कैप्टन बेनीवाल ने दो छेद देखे। जांच करने पर मालूम हुआ कि वहां एक-एक हजार पौंड के दो बम दबे पड़े हैं। इन बमों को निष्क्रिय करना बड़ा ही जोखिम भरा काम था क्योंकि समय बीतने से वे बहुत खतरनाक हो गए थे। इस काम में निहित जोखिम की परवाह न करते हुए, उन्होंने इस काम को स्वयं अपने हाथ में लिया, यद्यपि यह काम बम निपटान यूनिटों के विशेषज्ञों द्वारा किया जाना चाहिए था।

इससे पहले भी, 2 जनवरी, 1973 को उन्हें सैपरों के एक दल के साथ, बेडीवाला पुल से विस्फोटकों को हटाकर, पुल को सुरक्षित करने का काम सौंपा गया था। संक्रियाओं के दौरान शत्रु ने इस पुल को काफी नुकसान पहुंचाया था, उसके विस्फोटक कक्ष अंशतः क्षतिग्रस्त हो गए थे और विस्फोटकों के फट जाने का खतरा था। इस काम में निहित खतरे को महसूस करते हुए, वे इस काम में स्वयं ही जुट गए और अधिकांश विस्फोटकों को वहां से हटा दिया।

इन संक्रियाओं में, कैप्टन महेन्द्र सिंह बेनीवाल ने भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस, दृढ़-संकल्प और नेतृत्व का परिचय दिया।

3. लैफ्टिनेन्ट प्रीत पाल सिंह (आई० सी० 24751) इंजीनियर्स ।

लैफ्टिनेन्ट प्रीत पाल सिंह उत्तरी क्षेत्र में एक इंजीनियर रेजीमेंट के साथ काम कर रहे थे । इस क्षेत्र का थाको-चक इलाका टैंक-रोधी और कार्मिक-रोधी सुरंगों से भरा पड़ा था जो 1971 के भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान पाकिस्तानी सैनिकों ने वहां बिछायी थीं । इन सुरंगों पर घनी लम्बी हाथी घास उग आई थी । कीचड़ इकट्ठा हो गया था और एक वर्षाऋतु भी बीत चुकी थी । पाकिस्तानी सैनिकों से बरामद रिकार्ड प्रमाणिक नहीं थे और कुछ सुरंग-क्षेत्रों के रिकार्ड भी उपलब्ध नहीं थे । इस प्रकार, लेफ्टिनेन्ट प्रीत पाल सिंह को सौंपा गया इन सुरंगों की सफाई का काम बड़ा जोखिम-भरा था । अपनी जान को खतरे में डालकर, इन्होंने प्रचलित-अप्रचलित दोनों तरीकों का इस्तेमाल करते हुए, इस काम को पूरा किया ताकि सैनिकों और असैनिक व्यक्तियों को नुकसान न पहुंचे और जमीन जल्दी ही खेतीबाड़ी के लिए उपलब्ध हो जाए । उन्होंने स्वयं काम करके अपने जवानों का हौसला बढ़ाया और दो बार तो सुरंगों के फट जाने से, उनकी जान बाल-बाल बची लेकिन वह बुरी तरह घायल हो गए । फिर भी वह बड़ी निर्भीकता से अपना काम प्रसन्नतापूर्वक करते रहे और उसे बहुत कम समय में पूरा कर दिया ।

इस संक्रिया में लैफ्टिनेन्ट प्रीत पाल सिंह ने भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप कुशल नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

4. सैकिन्ड लैफ्टिनेन्ट नरेन्द्र कुमार काकुर (आई० सी० 25470) इंजीनियर्स ।

1971 के भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान, जम्मू और कश्मीर के छम्ब क्षेत्र में पिम्पल स्थित चौकी से शत्रु के उस इलाके का, जिस पर पाकिस्तानी सेनाओं का प्रभुत्व था बड़ी अच्छी तरह प्रेक्षण किया जा सकता था । छम्ब क्षेत्र में सीमांकन कार्य के बाद यद्यपि यह जगह नियंत्रण रेखा के हमारी ओर पड़ी थी लेकिन फिर भी यह पाकिस्तानी सैनिकों के प्रभुत्व में रही । शत्रु ने पहली ही चौकी पर दो संकरी खाइयां खोद ली थीं और वहां सुरंगें भी बिछा दी थीं ।

यह निर्णय किया गया कि अपनी अग्रवर्ती स्थिति और पिम्पल चौकी के बीच के इलाके से अपनी सुरंगों को हटा लिया जाए ताकि बाद में इस चौकी पर अधिकार किया जा सके । सेकिण्ड लैफ्टिनेन्ट नरेन्द्र कुमार काकुर को, इंजीनियर्स दल के साथ, यह काम सौंपा गया । अपनी जान की कतई परवाह न करते हुए, उन्होंने शत्रु की गोलाबारी और सुरंगों बिछाने के उद्देश्य से उत्पन्न खतरे के बावजूद इन सुरंगों को साफ कर दिया । चौकी पर ही अपनी सुरंगें बिछाने के उद्देश्य से, वे फिर उस प्लाटून के साथ जाने के लिए तैयार हो गए जिसे चौकी को अपने कब्जे में लेने का काम सौंपा गया था । चौकी पर कब्जा करने के तत्काल बाद, इन्होंने वहां चुपचाप 68 सुरंगें बिछा दीं । इस काम को करते-करते, इंजीनियर्स दल अग्रिम रक्षित स्थिति से 30 गज दूर निकल गया और उसी समय पाकिस्तानी सैनिकों ने, 3 इंची मोर्टारों सहित, चौकी पर, भारी गोलाबारी शुरू कर दी । इस गोलाबारी के दौरान शत्रु की सुरंग फट जाने के कारण दल के एक जवान की टांग में चोट आई, किन्तु वे अपनी जान को खतरे में डालकर, उसे ले आए, इसी बीच, उनके दल के दो और जवान तथा वे स्वयं भी इसी तरह घायल हो गए । शत्रु की गोलाबारी और सुरंगों से लगातार उत्पन्न खतरों से भयभीत न होते हुए, और अपने को चोट लग जाने के बावजूद, वे फिर घायल जवानों को बचाने के लिए गए तथा उन्हें बचा लाए ।

यह केवल सेकिण्ड लैफ्टिनेन्ट नरेन्द्र कुमार काकुर के प्रयासों का ही परिणाम था कि पिम्पल चौकी पर तैनात प्लाटून ने शत्रु को वहां नहीं पहुंचने दिया, यद्यपि शत्रु चौकी को पुनः अपने कब्जे में लेने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहा था । इस कार्रवाई में, उन्होंने भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

5. सैकिण्ड लैफ्टिनेन्ट बी० एम० जानी (आई० सी० 25102) इंजीनियर्स ।

उत्तरी क्षेत्र में इंजीनियर्स रेजीमेंट के साथ काम करते हुए, सैकिण्ड लेफ्टिनेन्ट बी० एम० जानी को सीमांकन समझौते से सम्बद्ध एक पिकेट से सुरंगें हटाने का काम सौंपा गया । 11 दिसम्बर, 1973 को यह दो फील्ड प्लाटूनों के साथ चले और 24 घंटे लगातार चलते रहने के बाद अगले दिन उस स्थान पर पहुंच गए । इन 24 घंटों में इन्हें बर्फ और दलदल में से होते हुए, उपस्कर के साथ, मुख्यतः पैदल ही चलना पड़ा और 9,300 फुट की ऊंचाई पर बर्फ से ढके एक दर्रे को भी पार करना पड़ा पिकेट पर इन्हें सामरिक महत्व के पहुंच मार्ग के अग्रभाग को साफ करना था । वहां बड़ी ढलान थी जिस पर सुरंगें बड़ी बेतरतीबी से बिछी हुई थीं । अधिकांश सुरंगें इधर उधर सरक गई थीं या बर्फ के नीचे दब गई थीं । यद्यपि सेकिण्ड लेफ्टिनेन्ट जानी और इनके दल के छः जवान सुरंग फट जाने के कारण पहले घायल हो चुके थे, फिर भी वे स्वयं सबसे आगे-आगे सुरंग क्षेत्र में गए । इस क्रिया में इन्हें पहले बर्फ हटाकर सुरंग का पता लगाना था और फिर यह देखना था कि वह सरक कर कहां पहुंच गई है । खड़ी ढलान के कारण यह बहुत ही दुष्कर कार्य था । सुरंगों के सरक जाने के कारण इस काम में जोखिम भी बहुत था और तापमान शून्य डिग्री से नीचे होने की वजह से सुरंगें बहुत खतरनाक बन गई थीं । इस काम में निहित जोखिम को देखते हुए, जहां कि एकाध बार ही गलत पैर पड़ जाने से शरीर का कोई अंग उड़ सकता था, उन्होंने इस काम से स्वयं मुक्त होने अथवा इसे अपने किसी अधीनस्थ कार्मिक को सौंपने से साफ इन्कार कर दिया । काम समय पर पूरा हो गया और अग्रभाग से सभी सुरंगें निकाल दी गईं ।

इस कार्रवाई में, सैकिण्ड लैफ्टिनेन्ट बी० एम० जानी ने भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

6. जे० सी० 49300 सूबेदार जोगा सिंह
कुमायूं रेजिमेन्ट

4 अगस्त, 1973 को प्रातः 9.00 बजे नागालैण्ड के एक इलाके में कुछ सशस्त्र विरोधियों की मौजूदगी की खबर मिली । सूबेदार जोगा सिंह को 20 जवानों के एक हमलावर दल के साथ जाने के लिए कहा गया, जिसका नेतृत्व कैप्टन जसबीर सिंह कर रहे थे । यह दल क्षेत्र पार कर, 4 अगस्त, 1973 को प्रातः 11.00

बजे सदिग्ध स्थल पर पहुंचा। जब यह दल आगे बढ़ रहा था तो विरोधियो ने एकाएक गोली चला दी और एक हथगोला भी फेंका। यह देखकर कि प्लाटून के कमाण्डर ने विरोधियो पर हमला कर दिया है, सूबेदार जोगा सिह ने भी धावा बोल दिया। जब इन्होने देखा कि एक विरोधी उनके कमाण्डर पर गोली चलाने की कोशिश मे है, तो वह उस विरोधी पर टूट पडे और उसकी वही मौत के घाट उतार कर उनके शस्त्रो को अपने कब्जे मे ले लिया।

सूबेदार जोगा सिह की इस साहसपूर्ण कार्रवाई से उनके प्लाटून कमाण्डर की जान बच गयी जो उस समय एक अन्य विरोधी से निपट रहे थे और अपने ऊपर होने वाले हमले से बेखबर थे। एक बार इससे पहले भी, सूबेदार जोगा सिह ने अकेले ही एक प्रमुख विरोधी का बडी दूर तक पीछा करके उसे पकड लिया था।

सूबेदार जोगा सिह ने आद्योपान्त भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस और दृढ-सकल्प का परिचय दिया।

7. जे० सी० 205 सूबेदार कियार सिह
जम्मू और कश्मीर मिलिशिया

1971 के भारत-पाकिस्तान सघर्ष के दौरान, जम्मू और कश्मीर के छम्ब क्षेत्र मे पिम्पल एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थल था जहा से शत्रु के इलाके पर बडी अच्छी तरह से नजर रखी जा सकती थी और उस क्षेत्र मे शत्रु के पिकेट्स पर प्रभुत्व रखा जा सकता था। । इलाके के सीमाकन के बाद, यह चौकी नियन्त्रण-रेखा के हमारी ओर आ गई थी, लेकिन इस पर कब्जा पाकिस्तानी सैनिको का ही रहा।

अपनी अग्रवर्ती पिकेट तथा पिम्पल चौकी के बीच के क्षेत्र से सुरगो की सफाई के बाद, जम्मू और कश्मीर मिलिशिया की एक रेजिमेट को पिम्पल चौकी पर कब्जा करने का काम सौपा गया। 23/24 मई, 1973 की रात को सूबेदार कियार सिह को एक प्लाटून की कमान सौपी गयी और उन्हे चौकी पर कब्जा करने का आदेश दिया गया। इन्होने अपनी प्लाटून को दो दलो मे संगठित किया और पहले दल का नेतृत्व स्वय सभाला। इनका दल चुपचाप आगे बढता रहा और शत्रु को इसकी कानो-कान खबर न लगने दी और अपने लक्ष्य स्थान पर मोर्चा सम्भाल लिया। इस बीच प्लाटून का दूसरा दल भी चौकी पर पहुंच गया।

सूबेदार कियार सिह ने क्षेत्र की टोह ली और तत्काल अपनी प्लाटून को खाइया खोदने के काम पर लगा दिया। खाइया खोदने की आवाज सुनकर पाकिस्तानी सैनिको ने राइफलो और हल्की मशीन गनो से गोली चलानी शुरु कर दी और साथ-साथ मे वे अधि-प्रदीपक बम भी फेंकते जा रहे थे। लेकिन इस गोलाबारी के बावजूद प्लाटून खाइया खोदती रही। सूबेदार कियार सिह एक-एक जवान के पास जाकर उसे अपना काम करते रहने की प्रेरणा देते रहे। शत्रु ने फिर मध्यम मशीन गनो, 2 इंची व 3 इची मोर्टारो से भारी और कारगर गोलाबारी की। किन्तु सूबेदार कियार सिह शत्रु की ओर से होने वाली फायर के बीच निर्भीकतापूवक अपने सैनिकों को बहादुरी से चुनौती का मुकाबला करने की प्रेरणा देते रहे। प्लाटून ने राइफलों, हल्की मशीन गनो तथा 2 इची मोर्टारो से शत्रु की गोलाबारी का कारगर जवाब दिया और अन्ततः चौकी पर कब्जा कर लिया।

इस कार्रवाई मे, सूबेदार कियार सिह ने भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओ के अनुरूप साहस, दृढ-सकल्प और नेतृत्व का परिचय दिया।

8. जे० सी० 44626 नायब सूबेदार कोनथ थेवराथिल पद्मनाभन,
इंजीनियर्स नाम्बियार, ।

नायब सूबेदार कोनथ थेवराथिल पद्मनाभन नाम्बियार इंजीनियर रेजिमेट की एक प्लाटून की कमान कर रहे थ जिसे हुसनीवाला और खमकरण क्षेत्रो से सुरगे उठाने का काम सौपा गया था। सुरगो को उठाने का यह काम बहुत ही खतरनाक था विशेषत इसलिए और भी कि सुरगो का कोई रिकार्ड उपलब्ध नही था। सम्बन्धित क्षेत्र जोखिमभरा था और एक वर्ष से अधिक समय तक सुरगो के भूमि पर पडे रहने के कारण वे अधिक खतरनाक बन गई थी। अपनी जान को अत्यधिक खतरा होने के बावजूद नायब सूबेदार नाम्बियार निरन्तर सुरग क्षेत्र मे रहकर उठाने मे अपनी प्लाटून का नेतृत्व करते रहे। स्वय कार्य करते रहकर इन्होने निर्धारित समय के भीतर इस काम को पूरा करने मे अपने जवानो को प्रेरणा दी। इस सक्रिया के दौरान, एक कार्मिक-रोधी सुरग के अकस्मात फट जाने से इनकी आखो मे चोट आयी और इन्हे, इनकी इच्छा के विरुद्ध, अस्पताल ले जाना पडा।

सुरग उठाने की इस समग्र कार्रवाई मे, नायब सूबेदार कोनथ थेवराथिल पद्मनाभन नाम्बियार ने, भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओ के अनुरूप, अनुकरणीय साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

9 ज० सी० 48947 नायब सूबेदार मुनेश्वर वत्स सिह
इन्टेलिजेस कोर

1 जून, 1973 को खबर मिली कि मेजर रमेश चन्द्र शर्मा जो स्काउट्स की एक अग्रवर्ती राइफल कम्पनी की कमान कर रहे थे, एक विकट क्षेत्र मे भटक गए और वहा से निकलने की कोशिश मे उनकी टाग टूट गयी।

उन्हे उस क्षेत्र मे तुरन्त निकालना अत्यन्त आवश्यक था। नायब सूबेदार मुनेश्वर वत्स सिह तुरन्त स्वेच्छापूर्वक इस काम के लिए तैयार हो गए और इन्होने असैनिक व्यक्तियों का एक बचाव दल बनाकर उसे बचाव-कार्य की प्रक्रिया समझायी। उस क्षेत्र मे विकट भाग को पार करके और लगातार 48 घन्टे कार्य करते रहने के बाद, यह मेजर शर्मा को सुरक्षित वापस ले आये।

इस कार्रवाई मे नायब सूबेदार मुनेश्वर वत्स सिह ने साहस, पहलशक्ति और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

10. जे० सी० 50029 नायब सूबेदार बीर जग छेत्री
गोरखा राइफल्स

नायब सूबेदार बीर जग छेत्री एक गश्ती आन्तरिक सुरक्षा सैनिक टुकड़ी की एक राइफल प्लाटून की कमान कर रहे थे जिसे

मई, 1973 में उत्तर प्रदेश में हुई गड़बड़ी के दौरान प्रान्तीय सशस्त्र पुलिस दल को निरस्त्र करने का काम सौंपा गया था। 22 मई, 1973 को प्रान्तीय सशस्त्र पुलिस दल के कार्यालय भवन पर पहला हमला किया गया। पुलिस दल के कार्मिक इस भवन की छत पर से, छोटे हथियारों से गोलाबारी कर रहे थे। इन्होंने हमले में अपनी प्लाटून का स्वयं नेतृत्व किया जब कि सशस्त्र पुलिस दल के कार्मिकों की इनकी ओर सीधी गोलीबारी हो रही थी। जब तीन दिशाओं से कारगर गोलीबारी के कारण, इनकी प्लाटून आगे बढ़ने में असमर्थ हो गयी तो यह स्वयं कुछ जवानों को लेकर आगे बढ़े और बायें पार्श्व तथा रेलपथ की ओर से ही हो रहे प्रतिरोध को समाप्त कर दिया। अपने व्यक्तिगत उदाहरण और नेतृत्व से, इन्होंने अपनी कमान के जवानों को प्रेरित किया और उन्होंने बहुत ही थोड़े समय में अपूर्व सफलता प्राप्त कर आगे होने वाली खूनखराबी को बचा लिया।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार बीर जंग छेत्री ने भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्परा के अनुरूप साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

11. 3948124 नायक प्रताप चन्द
डोगरा रेजिमेंट

18/19 अप्रैल, 1974 की रात को नायक प्रताप चन्द नागालैण्ड के मोकोक चुंग जिले में एक विशेष गश्ती दल के सैक्शन कमाण्डर थे। यह गश्ती दल विरोधियों के छिपने के स्थान का पता लगाने की कोशिश कर रहा था। इस तलाश के दौरान, गश्ती दल, अन्धेरे और खराब मौसम में, दुर्गम जंगल से होता हुआ कैम्प के पास पहुंचा। दल ने देखा कि कैम्प तक खडी चट्टान के नीचे स्थित है और वहां चक्करदार रास्ते से होकर ही पहुंचा जा सकता है। इन्हें "बाशा" के पिछले हिस्से को घेरने के लिए कहा गया और गश्ती दल के कमाण्डर उसके प्रवेश द्वार की ओर बढ़े। नायक प्रताप चन्द चुपके-चुपके "बाशा" की ओर बढ़े और जैसे ही वे मोर्चा सम्भालने को थे कि उन्होंने एकाएक "बाशा" के प्रवेश द्वार की ओर से कुछ पैरों की आहट सुनी। वे तुरन्त भाग कर वहां पहुंचे और उन्होंने देखा कि दो विरोधी अपने डाह दमकाते हुए, हमला करने के लिए "बाशा" से बाहर भागे जा रहे है। गश्ती दल के नेता एक विरोधी से जूझ पड़े जबकि दूसरा विरोधी उन पर आक्रमण करने की कोशिश कर रहा था। नायक प्रताप चन्द उस दूसरे विरोधी के पीछे और पहले इसके कि वह विरोधी गश्ती दल के नेता पर प्रहार करता, वे बिना किसी झिझक के उस पर टूट पड़े। दोनों में खूब गुत्थम-गुत्था हुई और अन्त में नायक प्रताप चन्द ने उस विरोधी पर काबू करके उसे जमीन पर पटक दिया। हथियारों तथा महत्वपूर्ण दस्तावेजों सहित, विरोधियों को हिरासत में ले लिया गया।

इस कार्रवाई में नायक प्रताप चन्द ने भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप असाधारण साहस, दृढ़-संकल्प और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

12. 1423987 नायक मनजीत सिंह
इंजीनियर्स

नायक मनजीत सिंह 31 अगस्त, से 10 सितम्बर, 1973 के बीच गुजरात में आयी विध्वंसकारी बाढ के दौरान कैरा जिले के नवगाम तालुक में बचाव कार्य कर रहे एक दल के नान-कमीशण्ड आफिसर इंचार्ज थे। जब वे बचाव कार्य के लिए मोती कलोनी गाव की ओर जा रहे थे तो उनकी नाव साबरमती नदी के तेज बहाव में बह गयी। लेकिन वे विचलित नहीं हुए और बडी बहादुरी से नाव को चार मील तक नदी के बहाव के साथ खेते हुए अपनी टुकडी को सकुशल नायका गांव में ले आय। इधर उनका पता लगाने की कोशिश की जा रही थी और उधर यह अगले 72 घन्टे तक अपने आसपास के गावों में बचाव कार्य में जुटे रहे। अपने व्यक्तिगत उदाहरण, नेतृत्वशक्ति और साहस द्वारा उन्होंने पर्याप्त खाना, वस्त्र और विश्राम न मिलने के बावजूद अपने जवानों को काम में जुटे रहने की प्रेरणा दी।

इस कार्रवाई में नायक मनजीत सिंह ने भारतीय थल सेना की सर्वोत्कृष्ट परम्पराओं के अनुरूप साहस, नेतृत्वशक्ति, कर्मशक्ति तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

13. 1178689 नायक अन्नामा पोलुस (मरणोपरांत)
आर्टिलरी

22 मई, 1973 को आर्टिलरी की एक मीडियम रेजिमेंट को सशस्त्र दल की एक बटालियन को निरस्त्र करने का काम सौंपा गया था। लगभग 300 जवानों ने हथियार उठा लिये थे और थल सेना की टुकडी पर राइफलों तथा हल्की मशीन गनों से गोलीबारी करके कड़ा प्रतिरोध कर रहे थे। इन कार्मिकों द्वारा छोटे हथियारों से की जा रही भारी तथा सही गोलीबारी के कारण थल सेना की दो प्लाटूने आगे बढ़ने में एकदम असमर्थ हो गयी। 8 फुट ऊंचे बुर्ज से एक हल्की मशीन गन द्वारा सैनिकों पर भारी और सही गोलीबारी की जा रही थी। सैक्शन कमाण्डर ने नायक अन्नामा पोलुस को, जो बुर्ज की पिछली ओर थे, आदेश दिया कि वह इस दल के कार्मिकों की गन को उलझाए रखें। वह एक और गनर को लेकर, विरोधियों की गोलीबारी के बीच, रैंगते हुए आगे बढ़े और बुर्ज की पिछली ओर पहुचने पर,उन्होंने अहाते की एक चार फुट ऊंची दीवार के पीछे ओट ले ली जहां से उन्हें बुर्ज की दीवार में एक छेद दिखायी दिया। उन्होंने महसूस किया कि जमीन पर से शत्रु का कारगर ढंग से मुकाबला नहीं किया जा सकता। अतः वह अहाते की दीवार पर चढ़ गये और वहां से मोर्चा सम्भाल कर उन्होंने, बुर्ज की दीवार के उस छेद से अपनी राइफल से धड़ाधड़ कई गोलियां चलायी जिसके परिणामस्वरूप, दल के दो कार्मिक, जोकि हल्की मशीन गन चला रहे थे, उनकी फायर से बुरी तरह घायल हो गये और विरोधियों की गन की गोलाबारी बन्द हो गई। लेकिन, जब नायक अन्नामा पोलुस नितान्त अरक्षित स्थिति से, निर्भीकतापूर्वक इस कार्रवाई में जुटे हुए थे, तो उनकी खोपडी और सीने में गोली लगी और दीवार से गिरकर, उनकी वहीं मृत्यु हो गयी।

इस कार्रवाई में, नायक अक्षामा पोलुत ने उत्कृष्ट वीरता, दृढ़-संकल्प तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

14. 4241583 लांस नायक राम जीवन चौधरी गार्ड्स (मरणोपरांत)

22 मई, 1973 को लांस नायक राम जीवन चौधरी एक ऐसी इन्फैन्ट्री बटालियन की कम्पनी की अग्रवर्ती प्लाटून में थे जिसने एक सशस्त्र दल की लाइन्स को खाली कराने का काम सौंपा गया था । दल के कार्मिक पूरी तरह हथियारों से लैस थे और उन्होंने इमारतों में अपने मोर्चे लिए हुए थे । लांस नायक चौधरी अपनी कम्पनी के एक सैक्शन की कमान कर रहे थे जिससे एक हल्की मशीनगन चौकी को खाली कराने का काम सौंपा गया था जहां से एक इमारत से गोलीबारी की जा रही थी । इस इमारत से हल्की मशीनगन द्वारा की जा रही कारगर गोलीबारी के कारण सैक्शन के जवान आगे नहीं बढ़ पा रहे थे । जब उन्होंने अनेक सैनिकों को हताहत होते हुए देखा तो वह गन का मुंह बन्द करने के लिए आगे बढ़े । जब वह चौकी से कुछ गज कहीं दूर थे, तो उन पर दो दिशाओं से गोलियां चलने लगीं । यद्यपि उनकी दायीं बांह में घातक चोट लग गयी थी, फिर भी वह हल्की मशीनगन चौकी की ओर बढ़ते रहे । जब वह आक्रमण कर रहे थे तो उन्हें दूसरी बार हल्की मशीनगन की गोली लगी । लेकिन फिर भी उन्होंने एक ही बार में गनर को गोली मार कर हल्की मशीनगन का मुंह बन्द कर दिया । गम्भीर रूप से घायल हो जाने के बावजूद वह अपने जवानों का हौसला बढ़ाते रहे । कुछ ही मिनटों बाद घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्रवाई में लांस नायक राम जीवन चौधरी ने अनुकरणीय साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

15. 1180053 लांस नायक, सुन्दर आर्टिलरी

लांस नायक सुन्दर मीडियम रेजिमेंट में थे जिसे 22 मई, 1973 को सशस्त्र दल की एक बटालियन को निरस्त्र करने का काम सौंपा गया था । दल के लगभग 300 जवानों ने हथियार उठा लिये थे और आर्टिलरी रैजिमेंट के जवानों पर राइफलों और हल्की मशीनगनों से गोलीबारी करके उनका कड़ा प्रतिरोध कर रहे थे । छोटे हथियारों से की जा रही भारी और सही गोलीबारी के कारण दो प्लाटूनें आगे बढ़ने में बिल्कुल असमर्थ हो गयीं । तीन सैनिक, सड़क के बराबर, एक नाले में, बुरी तरह से घायल होकर, पड़े हुए थे । विरोधियों की भारी और सही गोलीबारी के कारण उन्हें वहां से निकालना सम्भव नहीं था । लांस नायक सुन्दर, कालम कमाण्डर की "जोंगा" जीप के ड्राइवर थे । जब उन तीन घायल जवानों को नाले में से निकालने के सभी प्रयत्न विफल हो गये तो, वे अपनी जान की कतई परवाह न करते हुए, "जोंगा" को उस स्थान पर ले गये जहां कि आहत जवान पड़े थे । उन्होंने "जोंगा" की आड़ लेकर, तीनों घायल सैनिकों को तुरन्त उठाया और वाहन में डाल दिया । यद्यपि, "जोंगा" गोलियों से छलनी हो गया था और उनकी दायीं अग्रबाहु में भी गोली से घाव हो गया था फिर भी उन्होंने किसी तरह वाहन को पीछे मोड़कर आहत जवानों को शीघ्रतापूर्वक सिविल अस्पताल पहुंचा दिया ।

इस कार्रवाई में लांस नायक सुन्दर ने अनुकरणीय साहस, पहलशक्ति और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

16. 3966208 सिपाही बलबीर सिंह, डोगरा रेजिमेंट

सिपाही बलबीर सिंह एक 'स्टाप' पार्टी के सदस्य थे जिसे नागालैण्ड में मोकोकचुंग में कैम्प लगाए विरोधियों के एक दल को गिरफ्तार करने का कार्य सौंपा गया था । उस क्षेत्र में लम्बी ऊंची हाथी घास थी, जिससे आगे देखने में रुकावट पड़ रही थी । 'स्टाप पार्टी' ने एक पेड़ के ऊपर प्रेक्षण चौकी स्थापित की जिसमें सिपाही बलबीर सिंह को तैनात किया गया । 5 मई, 1973 को चार घंटे तक वहां रहने के बाद इन्होंने उस घनी घास में कुछ हलचल सी देखी, जो अपने सैनिकों के मोर्चों से दूर हटती चली जा रही थी । इन्होंने पूर्व निश्चित संकेत द्वारा अपने साथियों को सावधान किया और फिर पेड़ से नीचे उतर आए और नीचे प्रतीक्षा कर रहे एक और सिपाही के साथ उस स्थान की ओर तेजी से दौड़े जहां इन्होंने हलचल देखी थी, ताकि छुपे हुए लोग स्टाप पार्टी से बचकर न भाग निकलें । वे मुश्किल से अभी कुछ ही गज आगे बढ़े थे कि दो विरोधियों से इनका आमना-सामना हो गया । आगे वाला विरोधी भरी हुई बन्दूक लिए हुए था किन्तु इससे पूर्व कि वह गोली चलाता, सिपाही बलबीर सिंह ने कूल्हे के सहारे अपनी कारबाइन मशीनगन से गोलीबारी कर दी जिससे उस विरोधी की तत्काल मृत्यु हो गयी । उन्होंने दूसरे विरोधी पर भी गोली चलाई किन्तु वह नाले में कूद जाने के कारण बच गया । इस मुठभेड़ में विरोधियों के भारी मात्रा में हथियार और महत्वपूर्ण कागजात पकड़े गए ।

इस कार्रवाई में सिपाही बलबीर सिंह ने साहस, पहलशक्ति और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

17. 4246647 गार्डसमैन मधु मुरमू गार्ड्स

गार्डसमैन मधु मुरमू एक इन्फैन्ट्री बटालियन के एक प्लाटून के अग्रवर्ती सैक्शन में सबसे आगे थे । उस सैक्शन को 22 मई, 1973 को एक सशस्त्र दल के पश्चिमी स्कंध पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था जहां पर उस दल के कार्मिक पूरी तरह सशस्त्र और मोर्चाबन्दी किए हुए थे । शस्त्रागार के पश्चिम में स्थित एक इमारत से हल्की मशीनगन से हो रही कारगर गोलीबारी के कारण प्लाटून का आगे बढ़ना रुक गया था । गार्डसमैन मधु मुरमू व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए उस इमारत की ओर बढ़े और फिर हल्की मशीनगन के साथ अकेले ही उस इमारत पर जा चढ़े और फिर सही लगातार गोलीबारी करके दोनों हल्की मशीन गन के प्रचालकों को मार दिया और गनों का मुंह बन्द कर दिया । इसके बाद प्लाटून को आगे बढ़ने और शस्त्रागार पर कब्जा करने के लिए वे औरों के साथ भिड़ गए जो शस्त्रागार से काफी कारगर ढंग से गोलीबारी कर रहे थे ।

इस कार्रवाई में गार्डसमैन मधु मुरमू ने साहस, दृढ़ता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

18. 5340213 राइफलमैन इन्द्र बहादुर थापा, गोरखा राइफल्स

राइफलमैन इन्द्र बहादुर थापा जिस गोरखा राइफल्स की बटालियन के साथ काम कर रहे थे, उसे एक सशस्त्र दल द्वारा पैदा की गई गड़बड़ी में उसे निरस्त्र करने का काम सौंपा गया था । 22 मई, 1973 को वह बटालियन उस दल से हथियार डलवाने में सफल हो गई । उसके उपरान्त शस्त्रागार पर कब्जा करने का काम हाथ में ले लिया गया । किन्तु शस्त्रागार के 400 कार्मिकों की

मौजूदगी मे, जो घातक हथियारो से लैस थे, शस्त्रागार गारद को निरस्त्र करने में बाधा पड रही थी। गोलीबारी से नाहक जाने जाती, इसलिए सैनिको को काफी देर तक बडे संयम से काम लेना पड़ा, जबकि दूसरी ओर से बराबर उत्तेजनात्मक कार्रवाई हो रही थी। इसी बीच बाहर से दल के 500 और कार्मिक उनमे आ मिले। तब इस भय से कार्रवाई करनी पडी कि कही इकट्ठे हुए वे लोग शस्त्रागार न खोल दें, जो बहुत खतरनाक होता। राइफलमैन इन्द्र बहादुर थापा उस कम्पनी के सैक्शन मे थे जिसने 22 मई, 1973 को रात के साढ़े आठ बजे शस्त्रागार पर हमला किया। राइफलमैन थापा ने दौड़कर गार्ड-रूम में उस गारद पर हमला किया जिसने पहले तो बार गोलियां चलाकर इनकी बायी जाघ पर घाव कर डाला था। घायल हो जाने और शरीर से बड़ी तेजी से खून बहने के बावजूद अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए वे आगे बढे और गार्ड को मजबूती से जकड़ लिया जो उन पर एक और गोली चलाने वाला ही था। इससे शस्त्रागार पर कब्जा हो सका और दल के 900 कार्मिको को, जो वहा एकत्रित हो गए थे, अन्तत. तितर बितर कर दिया गया।

इस कार्रवाई मे, राइफलमैन इन्द्र बहादुर थापा ने साहस, दृढ़ संकल्प और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

19. 1250771 गनर (ड्राइवर एम० टी०) कृष्णा रेड्डी शेशप्पीरी, आर्टिलरी

गनर (ड्राइवर) कृष्णा रेड्डी शेशप्पीरी आर्टिलरी की एक मीडियम रेजिमेंट के साथ काम कर रहे थे जिसे 1973 मे एक सशस्त्र दल द्वारा गड़बड़ी उत्पन्न किए जाने पर उसे निरस्त्र करने का काम सौपा गया था। यूनिट ने यह काम 22 मई, 1973 को अपने हाथ मे लिया और उस दल के 300 कार्मिकों, जो राइफलों तथा हल्की मशीनगनों से लैस थे, प्रतिरोध कर रहे थे। गनर (ड्राइवर) शेशप्पीरी जिस प्लाटून मे थे उसे छोटे हथियारो से होने गोली-बारीबारी का मुकाबला करना पड़ रहा था। जब सेना का एक जवान एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे की ओर दौड़ रहा था तभी उसके पेट मे हल्की मशीन गन से गोली आ लगी जिससे वह पूर्णतया खुले मे ही विरोधियों की गोलीबारी के सम्मुख आ गिरा। गनर शेशप्पीरी गम्भीर जोखिम उठा कर अपने बचाव मोर्चे से तत्काल दौड़े और उस घायल को उठा कर तुरन्त अपने मोर्चे पर वापस ले आए। जब वे यह शौर्य पूर्ण कार्य कर रहे थे तो उनकी जाघ मे गोली आ लगी किन्तु किसी प्रकार वे अपने साथी को सुरक्षित जगह पर लाने मे सफल हो गए जहा से उन दोनों को अस्पताल भेजा गया।

इस कार्रवाई मे गनर (ड्राइवर) कृष्णा रेड्डी शेशप्पीरी ने थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस, पहलशक्ति और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

20. 1242483 गनर (ओ० आर० ए०) सौआरीमुथू स्वामीदास, आर्टिलरी

गनर सौआरीमुथू स्वामीदास एक ऐसी मीडियम रेजिमेंट के साथ काम कर रहे थे, जिसे एक सशस्त्र दल द्वारा उत्पन्न की गई गड़-बड़ी मे 22 मई, 1973 को उसे निरस्त्र करने का काम सौपा गया था। लगभग 300 कार्मिको ने हथियार उठा लिए थे और संगठित रूप से राइफलों और लाइट मशीनगनों द्वारा सेना पर गोलीबारी करके उसका प्रतिरोध कर रहे थे। दो प्लाटूनों को उन पर छोटे हथियारों से भारी और सही गोलाबारी किये जाने से उन्हे पूर्णतया कील दिया था। एक जवान के वक्षस्थल मे गोली लगने से वह खुले मे बेहोश पडा हुआ था। गनर स्वामीदास अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए और सामने खतरा होते हुए भी, अपने बचाव-मोर्चे से बाहर निकले और दौडकर उस घायल जवान को उठा कर सड़क के साथ-साथ बहने वाले नाले की आड़ लेने के लिए भागे। जब वे ऐसा कर रहे थे तब उनकी कुहनी मे गोली आ लगी किन्तु फिर भी वे अपने साथी को सुरक्षित स्थान में ले आने मे सफल हो गए जहा से दोनों को अस्पताल भेज दिया गया।

इस कार्रवाई में, गनर सौआरीमुथू स्वामीदास ने थल की सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस, पहलशक्ति और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

सं० 104-प्रेज/75—राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को असाधारण कर्त्तव्यपरायणता एवं साहस के लिए "नौसेना मैडल"/"नैवी मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते है।

1. कमांडर कादरी मंजूनाथ (X) (00151) (टी), भारतीय नौसेना।

12 अक्तूबर, 1973 को बुरबालंगा नदी मे भारी बाढ़ के कारण उसके दाहिने तटबन्ध के टूट जाने का खतरा उत्पन्न हो गया था। सिविल प्राधिकरियों से सहायता की मांग आने पर कमांडर कादरी मंजूनाथ 2 अधिकारियो तथा 30 जवानो के एक दल के साथ नदी के तट पर गए और बांध की सुरक्षा करने के लिए 6 घटे तक निरन्तर काम करते रहे। लेकिन जब यह देखा कि काम काबू से बाहर है तो उसे वहां छोड़ दिया गया। वापस आते हुए वहा से लगभग आधे मील की दूरी पर उन्होने देखा कि धसते हुए एक कच्चे मकान की छत पर 2 महिलाएं और 5 बच्चे बैठे हुए हैं और उधर बाढ़ के पानी ने तटबंध की ओर जाने वाली सडक मे पहले ही भारी टूट-फूट कर दी थी। यह देखकर कि उन महिलाओं और बच्चों का जीवन संकट मे है, कमांडर मंजूनाथ अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए अपने साथ 2 अधिकारियो और 7 जवानो को लेकर काम चलाऊ बेड़ा बनाकर और उसकी मदद से सारी दूरी तैर कर उन महिलाओं और बच्चों को तीन पारी में बचा ले आए। चढ़ती हुई नदी और बढ़ते हुए अंधेरे मे उन्होंने इस कठिन और सराहनीय कार्य को तेजी से बहते हुए बाढ़ के पानी को पार करने के लिए किसी यंत्र की सहायता लिये बिना पूरा किया।

इस कार्रवाई मे कमांडर कादरी मंजूनाथ ने भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओ के अनुरूप साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. कमांडर देवेन्द्र कुमार यादव (X) (00280 के), भारतीय नौसेना।

कमांडर देवेन्द्र कुमार यादव को जनवरी, 1957 में नौसेना मे कमीशन प्रदान किया गया था। मई, 1959 मे उन्होंने नौसैनिक विमानन के लिए अपना नाम दिया था। उडान प्रशिक्षण सफलता-पूर्वक पूर्ण करने पर मई, 1961 मे इन्हें पाइलट विंग प्रदान किया

गया था। कमांडर यादव ने नौसेना के लड़ाकू स्क्वाड्रन से नौकरी प्रारम्भ की थी और अथक परिश्रम तथा दृढ़-संकल्प के कारण वे डेक पर पहले-पहल अर्हता प्राप्त करने वाले अधिकारियों में से थे। स्क्वाड्रन में वायुयान वाहक बोर्ड में कार्यावधि के दौरान उन्होंने फाइटर पाइलट के रूप में उत्कृष्ट कार्य किया। जुलाई, 1967 में उन्होंने हेलीकाप्टर प्रशिक्षण पूरा किया और तब से वे रोटरी विंग वायुयानों की उड़ान करते हैं। भारतीय नौसैनिक पोत विक्रांत पर एस० ए० आर० फ्लाइट के लिए फ्लाइट कमांडर के रूप में कार्यावधि पूर्ण करने पर उन्हें पनडुब्बी रोधक हैलीकाप्टर स्क्वाड्रन के लिए चुना गया था और फिर उन्हें ब्रिटेन में प्रतिनियुक्ति पर भेजने के लिए चुना गया। 1971 की संक्रियाओं के दौरान उन्होंने हैलीकाप्टरों को बड़ी कुशलता और निष्ठा के साथ उड़ाया। तदुपरांत कमांडर यादव को हैलीकाप्टर प्रशिक्षण स्कूल के कमान अफसर के रूप में नियुक्त किया गया और इस रूप में इन्होंने नौसेना में दो कोर्सों को पूरा किया और हैलीकाप्टर प्रशिक्षण को निश्चित रूप दिया।

कमांडर देवेन्द्र कुमार यादव ने आद्योपरान्त भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता और उत्कृष्ट कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

3. लैफ्टिनेंट कमांडर सतेन्द्र कुमार ओबराय (X) (00395)-वाई०), भारतीय नौसेना।

19 जून, 1973 की प्रातः कोस्मोज पाईअनीअर नामक एक तेलवाहक जहाज समुद्र में डूबा जा रहा था और उसे बचाने के लिए भारतीय नौसेना पोत बेतवा को भेजा गया था। उस समय समुद्र में तूफान आया हुआ था और लहरें 15-20 फुट ऊंची उठ रहीं थीं। लगभग 0715 बजे पोत ने अपनी नौका समुद्र में उतारी ताकि कोस्मोज पाईअनीअर की निकट से जांच की जा सके और इस बात का पता लगाया जा सके कि उस जहाज के कर्मीदल का कोई सदस्य उसमें तो नहीं है। भारतीय नौसेना पोत बेतवा के कार्यकारी अधिकारी लैफ्टिनेंट कमांडर सतेन्द्र कुमार ओबराय, समुद्री नौका का प्रभार सम्भालने के लिए स्वयं आगे आए। जब समुद्री नौका को उतारा जा रहा था तभी बड़े वेग से लहरें उठने लगीं। नौका जहाज की ओर झटके खा रही थी और उसमें बैठे कर्मीदल को बड़े जोर के हिचकोले लग रहे थे। इसी बीच कमांडर ओबराय के दाहिने हाथ में बड़ी चोट लगने पर भी वे नौका तथा कर्मीदल की बचाने में बराबर लगे रहे। बड़े अच्छे ढंग से बचाव-रस्सी पर चढ़ कर कर्मीदल के 4 सदस्यों को जहाज में चढ़ाने में सफल हो गए। जब नौका जहाज की ओर झटके खाने के कारण दो भागों में टूट गई तो बोसैन समुन्द्र में गिर पड़ा। इस पर कमांडर ओबराय ने तत्काल लाइफ-बुआय उसकी ओर फेंका। उन्होंने स्टर्न-शीट-मैन चिरत सिंह, सीमैन प्रथम श्रेणी, को जैकब-लैडर तक चढ़ने में सहायता की लेकिन ऐसा करत हुए स्वयं समुद्र में गिर पड़े और भयानक लहरें उन्हें पोत से दूर बहा कर ले गई और वे आंखों से ओझल हो गये। लेकिन उन्होंने अपनी सूझ-बूझ, आत्मविश्वास, साहस और दृढ़ संकल्प को बनाए रखा और तैर कर चार मील दूर एक गांव में सुरक्षित जा पहुंचे। उन्होंने स्थानीय प्राधिकारियों से सम्पर्क स्थापित किया और अविलम्ब अपने जीवित रहने की सूचना नौसैनिक प्राधिकारियों तक पहुंचाई जिससे उन्हें ढूंढ निकालने का जबरदस्त काम बच गया।

लैफ्टिनेंट कमांडर सतेन्द्र कुमार ओबराय ने भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप उत्कृष्ट साहस, नेतृत्व शक्ति, दृढ़-संकल्प और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. लैफ्टिनेंट कमांडर पीयूष झा (00526 डब्ल्यू०), भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनेंट कमांडर पीयूष झा को जुलाई, 1963 में भारतीय नौसेना में कमीशन प्रदान किया गया था और मई, 1965 में उन्होंने पाइलट के रूप में अर्हता प्राप्त की थी। केवल आठ वर्षों की अल्पावधि में उन्होंने कुल लगभग 2,400 घंटों की उड़ानें की और इस समय नौसैनिक हैलीकाप्टर प्रशिक्षण स्कूल के वरिष्ठ पाइलट हैं। अग्रवर्ती इलाकों में उड़ान भरने की अनेक सफल कार्यावधियों के उपरान्त इन्हें उड़ान प्रशिक्षक पाठ्यक्रम करने के लिए चुना गया और जून, 1971 में क्यू० एफ० आई० के रूप में अर्हता प्राप्त की। तदुपरांत उन्होंने एयर फोर्स फ्लाइंग कालेज में प्रशिक्षण देने का काम किया और फिर उन्हें नवगठित नैवल हैलीकाप्टर ट्रेनिंग स्कूल में नियुक्त किया गया जहां उन्होंने युवा पाइलटों को हैलीकाप्टर पर काम करने के लिए प्रशिक्षण देने में प्रशंसनीय तथा अनथक प्रयास किया। डेढ़ वर्ष से कुछ अधिक समय में इन्होंनें 1,200 घंटों से अधिक की प्रशिक्षण सम्बन्धी उड़ाने कीं। उन्होंने एक माह में अक्सर 90 घंटों से अधिक की उड़ानें भरीं। इस अल्पावधि में 20 पाइलटों से भी अधिक को इन्होंने हैलीकाप्टर पर काम करने के लिए प्रशिक्षित कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और हैलीकाप्टर प्रशिक्षण स्कूल की उच्चकोटि के संगठित एवं सुसंचालित यूनिट के रूप में व्यवस्थित करने में महान योगदान दिया है।

लैफ्टिनेंट कमांडर पीयूष झा ने आद्योपांत भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5. मुथन कलीअप्पन, लीडिंग एयर ड्राइवर (82871), भारतीय नौसेना।

मुथन कलीअप्पन लीडिंग एयर ड्राइवर जुलाई, 1964 में नौसेना में भर्ती हुए थे। वे अप्रैल, 1971 से फरवरी, 1973 तक नौसैनिक जहाज में रहे। इस दौरान उन्होंने नौसैनिक हैलीकाप्टर पर 395 घंटों में 680 उड़ानें भरीं। बन्दरगाहों की गश्त और जीवित बचे हुओं की खोज में 30 घंटे की उड़ान के अलावा उन्होंने विभिन्न प्रदर्शनों तथा बचाव संक्रियाओं में 5 बार जम्प भी किया। एक वाणिज्यक जलयान के हताहतों को बचाने के लिए जान लेवा प्रतिकूल मौसम की चिंता न करते हुए इन्होंने उड़ानें भरीं और पूर्वी सैक्टर में गोताखोरी का भी प्रशंसनीय कार्य किया।

श्री मुथन कलीअप्पन ने आद्योपान्त भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

6. जोगिन्दर सिंह, इंजीनियरिंग मैकेनिक, द्वितीय श्रेणी (96454),

भारतीय नौसेना।

19 जून, 1973 को जोगिन्दर सिंह, इंजीनियरिंग मैकेनिक, द्वितीय श्रेणी, खराब मौसम के होते हुए भी समुद्री नौका पर ड्रावइर

के रूप में कम करने के लिए आगे आए। भले ही उन्हें कै होती रही लेकिन वे इंजन पर काम करते है और तब तक उसे चलाते रहे जब तक कि उन्हे इन्जन को बन्द करने का आदेश नही दिया गया। इंजन को बन्द करने के उपरान्त वे जब बचाव-रस्सी से चढ़ने की तैयारी कर रहे थे, तो उन्होंने देखा कि कर्णधार और एक और सीमैन नौका के पिछले भाग में लगे काटे को जहाज से बाहर खतरनाक रूप से झूलते हुए रस्सों के साथ बांधने में कठिनाई अनुभव कर रहे है, उन्होंने बचाव-रस्सी को छोड़ दिया और उनकी सहायता के लिए बढ़े और रस्सों को काटे के साथ बांधने में सफल हुए। इस कार्रवाई में उनके बाजू का अगला भाग रस्से में फंस गया था और कुहनी से नीचे का भाग लगभग टूटने ही वाला था। नौका छोड़ने का आदेश प्राप्त होने पर ही वे जैकब-सीढ़ी से ऊपर चढ़े।

जोगिन्दर सिंह, इंजीनियर मैकेनिक ने इस प्रकार भारतीय नौसेना की उच्चकोटि की परम्पराओं के अनुरूप साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

कृ० बालचन्द्रन
राष्ट्रपति के सचिव

वाणिज्य मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 14 अगस्त 1975

सं० 4(1)/73-ई०पी०जेड०—केन्द्रीय सरकार श्री बाल-सुब्रमणियम के स्थान पर श्री एम० के० कुकरेजा, संयुक्त सचिव, कम्पनी कार्य विभाग को सान्ताक्रुज इलैक्ट्रोनिक्स एक्सपोर्ट प्रोसेसिंग जोन बोर्ड के सदस्य के रूप में एतद्द्वारा नियुक्त करती है और भारत सरकार के (भूतपूर्व) विदेश व्यापार मंत्रालय की अधि-सूचना सं० 16(2)/73 टी०ए०ई०पी० दिनांक 20 जनवरी 1973 में और आगे निम्नोक्त संशोधन करती है :—

उक्त अधिसूचना में, क्रमांक 14 के सामने दी गई प्रविष्टि **के स्थान पर** निम्नोक्त प्रविष्टि की जाएगी, अर्थात् :

"14. श्री एम० के० कुकरेजा,
संयुक्त सचिव,
कम्पनी कार्य विभाग।"

यू० आर० कुर्लेकर, उप निदेशक

उद्योग और नागरिक पूर्ति मंत्रालय
(औद्योगिक विकास विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 11 अगस्त 1975

संकल्प

सं० 07011/3/72-नमक—भूतपूर्व औद्योगिक विकास मंत्रालय के समसंख्यक संकल्प दिनांक 7 अक्तूबर, 1974 के क्रम मे भारत सरकार एतद्द्वारा निम्नलिखित व्यक्तियों को नमक के केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सलाहकार बोर्ड मे नियुक्त करती है :—

सदस्य

क—केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड

18. श्री के० नारायण राव,
सदस्य, लोक सभा,
शान्ता नरसीपुरम्, वीरघाटम पो०ओ०
श्रीकाकुलम जिला (आ० प्र०)।
दिल्ली का पता :
123, साउथ एवेन्यू,
नई दिल्ली।

ख—क्षेत्रीय सलाहकार बोर्ड

तमिलनाडु

9. श्री सी० चिट्टी बाबू,
सदस्य, लोक सभा,
24, नागप्पा अय्यर स्ट्रीट,
ट्रिपिली केन, मद्रास-5
दिल्ली का पता :
28, नार्थ एवेन्यू,
नई दिल्ली।

आन्ध्र प्रदेश

7. श्री पी० वी० जी० राजू,
सदस्य, लोक सभा,
पूल बाग पैलेस,
विजय नगरम्-2 (आन्ध्र प्रदेश)
दिल्ली का पता :
सी०-1/16, पण्डारा पार्क,
नई दिल्ली।

8. श्री एम० अनकीनीडु,
सदस्य, लोक सभा,
गुडीवाडा, कृष्णा जिला (आन्ध्र प्रदेश)
दिल्ली का पता :
7, फिरोजशाह रोड,
नई दिल्ली।

पश्चिम बंगाल

4. श्री राम भट्टाचारजी,
शीतलताला,
भद्रेश्वर पी० ओ०
हुगली जिला (प० बंगाल)

7. श्री माधुर्य हलधर,
सदस्य, लोक सभा,
टीचर्स क्वार्टर्स,
सरिशा पी० ओ०, 24-परगना,
जिला—पश्चिम बंगाल।
दिल्ली का पता :
408, विट्ठल भाई पटेल हाउस,
नई दिल्ली।

उड़ीसा

4. श्री के० एन० पाठक,
संयुक्त सचिव,
गंगपुर श्रमिक संघ,
वीर मित्रपुर पी० ओ०,
सुरेन्द्र नगर जिला, उड़ीसा

7. श्री चिन्ता मणि पाणिग्रही,
सदस्य, लोक सभा,
सन्तारापुर, श्री मां निवास,
भुवनेश्वर (उड़ीसा)

दिल्ली का पता :

109, नार्थ एवेन्यू,
नई दिल्ली ।

8. श्री लक्ष्मण महापात्र,
सदस्य, राज्य सभा,
छत्रपुर पी० ओ०
गंजम जिला (उड़ीसा)

दिल्ली का पता :

9, साउथ एवेन्यू,
नई दिल्ली ।

महाराष्ट्र

7. श्री डी० एस० पाटिल,
सदस्य, राज्य सभा,
लोनी पी० ओ०, दरहा ताल्लुक,
योतमला जिला, (महाराष्ट्र)

8. श्री एस० ए० कादर,
सदस्य, लोक सभा,
17, रहमत मंजिल,
बीरनारीमन रोड,
बम्बई-20

दिल्ली का पता :

18—फिरोजशाह रोड,
नई दिल्ली ।

गुजरात

7. श्री डी० पी० जदेजा,
सदस्य, लोक सभा,
सज्जन निवास, बेदी रोड,
जामनगर (गुजरात)

दिल्ली का पता :

101—103, साउथ एवेन्यू,
नई दिल्ली ।

8. श्रीमती कुमुदबेन मणिशंकर जोशी,
सदस्य, राज्य सभा,
छंगा धनोर, गंदेवी पी० ओ०
बलसाड़ जिला (गुजरात)

दिल्ली का पता :

183, साउथ एवेन्यू,
नई दिल्ली ।

राजस्थान

8. श्री नाथी सिंह,
सदस्य, राज्य सभा,
वकील कालोनी,
नीमदा गेट,
भरतपुर (राजस्थान)

दिल्ली का पता :

228, नार्थ एवेन्यू,
नई दिल्ली ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सभी राज्य सरकारों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, योजना आयोग, मंत्रिमंडल सचिवालय और प्रधान मंत्री सचिवालय को भेज दिया जाए ।

2. यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत के राजपत्र के भाग I खण्ड 1 में प्रकाशित किया जाए ।

आर० रामानुजम, अवर सचिव ।

रेल मंत्रालय

(रेलवे बोर्ड)

नई दिल्ली, दिनांक 11 अगस्त 1975

संकल्प

सं० ई० आर० बी० 1/73/21/40—रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के 30 अगस्त, 1973 के संकल्प सं० ई० आर० बी० 1/73/21/40 के क्रम में भारत सरकार ने श्री एच० एम० पंडित, जिन्होंने स्थायी स्वैच्छिक सहायता समिति की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है, के स्थान पर श्री एम० ए० नायडू को उक्त समिति का सदस्य मनोनीत किया है ।

अमृत लाल गुप्त, सचिव, रेलवे बोर्ड
एवं पदेन संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1974

No. 103 Pres./75.—The President is pleased to approve the award of "Sena Medal"/"Army Medal" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty and courage :—

1. Major MANOHAR SINGH DAYAL SINGH ADVANI (IC-18650), Engineers.

Major Manohar Singh Dayal Singh Advani was officer commanding of a field company of Engineers on 15th July, 1972 and had been entrusted with the task or recovering the mines which had been laid in the Western Sector six months earlier. A lot of thick under-growth had come up as also many of the mines had drifted and their fuses had become sensitive. Besides, in several cases, strips of mines had been superimposed on the mine-fields by other units making the recovery work hazardous. Several casualties had occurred while recovering nine fields in the neighbouring field companies.

Major Advani personally led the way in the mine fields prodding with hand as detectors were ineffective and only after he had located and neutralised the first set of mines and located the strips and pattern did he allow others to proceed with the work. In every case, where mines were difficult to locate, he personally undertook the task of locating and neutralising them. In the entire operation, he was associated with detection and neutralisation of over 1000 mines with his own hands. While clearing one of the mine fields he sustained severe burns on his hands and face due to a mine blast. This did not deter him in any way from

the task and after receiving first aid he was back again in the mine fields locating and neutralising the most difficult and sensitive mines which he did not allow any of his sub ordinates to neutralise Because of this, the task was completed within the stipulated time

In this operation Major Manohar Singh Dayal Singh Advani displayed courage determination and leadership in the best traditions of the Indian Army

2 Captain MAHENDRA SINGH BENIWAL (SS 23042), Engineers

Captain Mahendra Singh Beniwal was commanding an Engineering Platoon during mine lifting operations in Fazilka Section The task was extremely difficult and hazardous There were no records available mine fields were not fenced, and the mines were not laid in a set pattern Some of the anti tank mines were without pressure plates making them highly dangerous The area was covered with tall cotton crop and the ground was hard, making prodding extremely difficult Undeterred Captain Beniwal accepted the challenge with confidence and he personally entered the area, did the settling out and with courage and professional skill neutralised many mines Thus inspired his men followed him and carried out the task cheerfully

On the 14th January 1973 while clearing mines Captain Beniwal located two holes in the mine field On investigation, two 1000 lbs bombs were found to be barried Neutralising these bombs was full of hazards as they had become sensitive due to lapse of time Unmindful of the risk involved he personally undertook the task which was actually required to be done by expert of bomb disposal unit

On an earlier occasion on 2nd January 1973, he was detailed alongwith a party of sappers to remove the explosive from Beriwala bridge and make it safe The bridge had been badly tampered with by the enemy during the operations, the explosive chambers were partially damaged and he explosive could have become sensitive Realising the risk involved, he set about doing the task himself and cleared most of the explosives

In these operations Captain Mahendra Singh Beniwal displayed courage, determination and leadership in the best traditions of the Indian Army

3 Lieutenant PRITPAL SINGH (IC 24751), Engineers

Lieutenant Pritpal Singh had been serving with an Engineer Regiment in the Northern sector The Thako Chak area in this sector was full of anti-tank and anti-personnel mines laid by the Pakistani troops during the Indo-Pak Conflict of 1971 The mines were covered with thick growth of elephant grass and slush which had withstood one monsoon, the records handed over by the Pakistani troops were not authentic and some of the minefields no records were available, and as such clearance of these mines which was entrusted to Lieutenant Pritpal Singh was a hazardous task He carried out the task assigned to him using both conventional and unconventional means always at grave personal risk so that the troops and civilians did not suffer casualties and the land was quickly available for cultivation He inspired his troops by his personal example, so much so that he narrowly escaped two mine blasts in which he was injured badly Undeterred he continued his task most cheerfully and accomplished the job in record time

In his operation Lieutenant Pritpal Singh displayed leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army

4 Second Lieutenant NARENDAR KUMAR KAKUR (IC 25470) Engineers

In the Indo Pakistan Conflict, 1971 Pimple post in the Chhamb Sector in Jammu and Kashmir provided close observation of the enemy area and dominated Pakistani picquets in that sector Since delineation of the area in the Chhamb sector this point fell on our own side of the Line of Control although it remained under Pakistani domination The enemy had already dug two slit trenches and laid mines at the post

It was decided to clear our own mine lane in the area between our forward position and the Pimple post with a view to occupying the post later Second Lieutenant Narendra Kumar Kakur was detailed with his Engineers party to complete this task In complete disregard of his personal safety, he cleared these mines in the face of danger from enemy fire and mines In order to lay our own mines at the post itself he later volunteered to go with a platoon which was assigned the task of occupying that post Immediately after occupation of the post, he laid 58 mines stealthil While doing the job the Engineers party had gone 30 yards away from the forward defended positions when the Pakistani troops started heavy fire, including 3 inch mortars on the post As a result, an OR of his party was injured in the leg by the enemy mine blast but he brought him back to the trench at grave risk to his own life In the meanwhile two more other ranks of his party and he himself were similarly wounded Undeterred by constant danger from the enemy-fire and mines and despite his own injury he again went to rescue the injured other ranks and brought them back to safety

It was entirely due to the efforts of Second Lieutenant Narinder Kumar Kakur that the platoon at Pimple post kept the enemy at bay who were desparately trying to re occupy the post In this action he displayed courage Leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

5 Second Lieutenant VM JOHNNY (IC 24102), Engineers

Second Lieutenant V M Johnny while serving with an Engineers Regiment in the Northern Sector was assigned the task of clearing mines from a picquet involved in the delineation agreement On 11th December 1972, he proceeded with two field platoons and reached the location the next day after having been continuously on the move for 24 hours which was mainly a march on foot through snow and slush with equipment, involving the crossing of a snow bound pass at a height of 9 300 feet At the picquet, the task allotted was to clear a frontage on a tactical approach The slope was precipitous on which these mines had been laid haphazardly Most of the mines had drifted or were buried under the snow Inspite of having been previously injured in a mine blast and six men from his party having been similar casualties, Second Lieutenant Johnny personally led the way inside the mine field The task involved first clearing the snow locating a mine and then judging the drift which was made very difficult by the precipitous nature of the slope The task had become hazardous because of the drifting of mines and the sub-zero temperature had made the mines sensitive He refused to be relieved or to delegate the task to some of his subordinates because of the hazards involved where a false step would have meant loss of limb The task was completed in time and all mines in the frontage were recovered

In his action Second Lieutenant V M Johnny displayed courage leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army

6 JC 49300 Subedar JOGA SINGH Kumaon Regiment

On 4th August 1973 at 0900 hours information was received about the presence of some armed hostiles in an area in Nagaland Subedar Joga Singh was detailed to accompany an assault party of 20 other ranks led by Captain Jasbir Singh The party moved cross-country and reached the suspected area by 1100 hours on 4th August 1973 As the party moved ahead the hostiles suddenly opened fire and threw a hand grenade Seeing that the Platoon Commander had already charged into the hostiles, Subedar Joga Singh also followed suit Finding a hostile trying to fire at his commander he charged on the hostile and killed him on the spot and captured his weapon

This courageous act of Subedar Joga Singh saved the life of his Platoon Commander as he was dealing with another hostile and was unaware of the act of the other one On an earlier occasion Subedar Joga Singh had single handedly captured a leading hostile after giving him a long chase

Throughout Subedar Joga Singh displayed courage and determination in the best traditions of the Indian Army

7 JC 205 Subedar KEAR SINGH, Jammu and Kashmir Militia

In the Indo Pakistan Conflict 1971 Pimple was the dominating point in Chhamb Sector in Jammu and Kashmir area

which provided close observation of the enemy area and dominated their picquets in that Sector. On delineation of the area, the post fell on our own side of the line of control although it remained under the occupation of the Pakistani troops.

After clearance of mines between our forward picquet and the Pimple post, a regiment of J & K Militia was assigned the task of capturing the Pimple post. On the night of 23rd/24th May 1973, Subedar Kear Singh was given the command of a platoon and was ordered to capture the post. He organised his platoon in two parties and he himself led the first party. His party stealthily moved and, with complete surprise, took position on the objective. In the meantime, the second party of the platoon had also reached the post.

Subedar Kear Singh reconnoitred the area and immediately deloped his platoon to commence digging. On hearing the noise of digging, the Pakistani troops opened fire with rifles and light machine guns coupled with para-illuminating bombs. The platoon, inspite of the fire kept on digging. Subedar Kear Singh went from person to person and inspired them to continue their work. The enemy opened up yet another heavy and effective volley of fire from medium machine guns, 2 inch and 3 inch mortars. Undeterred, he kept on inspiring the troops to meet the challenge with full valour, exposing himself to enemy fire. The platoon effectively returned the enemy fire with rifles, light machine guns and 2 inch mortars and ultimately captured the post.

In this action, Subedar Kear Singh displayed courage, determination and leadership in the best traditions of the Indian Army.

8. JC 44626 Naib Subedar KONOTH THEVARATHIL, PADMANABHAN NAMBIAR, Engineers.

Naib Subedar Konoth Thevarathil Padmanabhan Nambiar was in command of a platoon of an Engineer Regiment which was assigned the task of lifting mines in Hussainiwala and Khem Karan areas. The mine lifting operation was a very hazardous task especially in view of the fact that no records were available, the terrain was treacherous and the mines had become sensitive having been in the ground for over a year. At great risk to his personal safety, Naib Subedar Nambiar was constantly present in the mine fields conducting his platoon in rifting mines. By his personal example, he inspired his men in completing the task allotted to him within the specified time. During the course of the operation, Naib Subedar Nambiar was injured in his eyes due to accidental blowing up of anti-personnel mine and had to be evacuated to hospital, much against his wishes.

Throughout the mine lifting operation, Naib Subedar Konoth Thevarathil Padmanabhan Nambiar displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

9. JC 48947 Naib Subedar MUNESHWAR VATS SINGH, Intelligence Corps.

Intimation was received on 1st June 1973, that Major Ramesh Chandra Sharma, who was commanding a forward Rifle Company of the Scouts, had strayed into a difficult area and that in a bid to escape, had fractured his leg.

It became absolutely necessary to extricate him from that area immediately. Naib Subedar Muneshwar Vats Singh readily volunteered for the job and organised a rescue operation party of civilians and briefed them. After negotiating the difficult terrain in that area and continuously working for full 48 hours, he managed to bring the officer back safely.

In this action Naib Subedar Muneshwar Vats Singh displayed courage, initiative and exceptional devotion to duty.

10. JC 50029 Naib Subedar BIR JANG CHHETRI, Gorkha Rifles.

Naib Subedar Bir Jang Chetri was in command of a rifle platoon as part of a mobile internal security column which was assigned the task of disarming the Provincial Armed Constabulary men during the disturbance in Uttar Pradesh in May 1973. On 22nd May 1973, in the first assault on the Provincial Armed Constabulary office building, from the top of which the Constabulary personnel were firing small arms, he personally led the attack of his platoon, exposing himself to the direct fire from the members of the Armed Constabulary. While advancing further, when his platoon was pinned down due to effective fire from three directions, he, on his own initiative, moved forward with a handful of men and cleared opposition from the left flank and the Railway track. By his personal example and leadership, he inspired the men under his command and they achieved spectacular success in a very short time, thus averting further bloodshed.

In his action, Naib Subedar Bir Jang Chhetti displayed courage and leadership in the best traditions of the Indian Army.

11. 3948124 Naik PARTAP CHAND, Dogra Regiment.

On the night of 18th/19th April 1973, Naik Partap Chand was a Section Commander in a special patrol in Mokokchung District in Nagaland. The patrol was trying to locate a hostile hideout. During the search, the patrol reached near the camp in pitch darkness and bad weather through almost impassable jungle. The camp was found located below a sharp cliff approachable only from a circuitous route. Naik Partap Chand followed his patrol leader and descended the cliff with the help of a rope. He was detailed to cover the rear of the 'basha' while the Patrol leader went to the entrance. Naik Partap Chand then approached the 'basha' stealthily and was about to take up position when he heard a sudden shuffling noise towards the entrance of the 'basha'. He at once rushed to the spot and saw two hostiles charging out of the 'basha' flashing their dahs. While his patrol leader grappled with one hostile, the other tried to attack him. Naik Partap Chand rushed after the second hostile and, without hesitation, pounced on him before the hostile could do any harm to the Patrol leader. After a hand-to-hand fight, Naik Partap Chand managed to overpower the hostile and pinned him to the ground. The hostiles were apprehended with arms and important documents.

In this action, Naik Partap Chand displayed exceptional courage, determination and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

12. 1423987 Naik MANJIT SINGH, Engineers.

Naik Manjit Singh was the NCO incharge of a rescue party operating in Nawagam taluka of Kaira district during the devastating floods in Gujarat between 31st August and 10th September, 1973. While proceeding to village Moti Kaloli for rescue operations his boat was swept away in the turbulent water of Sabarmati River. He remained calm and rowed his boat valiantly and brought the men of his detachment to safety at Nayaka village, four miles down stream. While every effort was being made to find out his whereabouts, Naik Manjit Singh for next 72 hours continued to carry out rescue operation in all villages around him. By his personal leadership, courage and example he guided his men to continue work without adequate food, clothing and rest.

In this action, Naik Manjit Singh displayed courage, leadership, drive and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

13. 1178689 Naik ANNAMMA POULOSE, Artillery.

(Posthumous)

On 22nd May 1973, a Medium Regiment of Artillery was given the task of disarming a battalion of armed personnel of Provincial Armed Constabulary located at Ramnagar, district Varanasi. Approximately 300 men who had taken up arms and had put up a well organised resistance by firing rifles and Light Machine Guns on the Army contingent. Two of the Army platoons were completely pinned down under heavy and accurate small arms fire from these personnel. One Light Machine Guns located on 8 feet high watch tower was bringing down heavy and accurate fire on the troops. The Section Commander ordered Naik Annamma Poulose, who was at the Light Machine Gun on the rear side of the tower to engage the gun of the constabulary personnel. He, accompanied by another gunner, crawled through the hostile fire, and on reaching the rear side of the watch tower, took cover behind a 4 feet high compound wall from where he could see an opening in the para-

pet wall of the watch tower. Realising that the enemy could not be engaged from the ground level effectively, he climbed up the compound wall, took up a position and rapidly fired a number of shots from his rifle, through the opening in the parapet wall. As a result, two armed personnel, who were manning the Light Machine Guns, were severly wounded by his fire and their gun was silenced. But, while carrying out this daring act from a completely exposed position, Naik Annamma Poulose received a shot in the skull and chest and fell from the wall and died on the spot.

In this action, Naik Annamma Poulose displayed gallantry, determination and devotion to duty of a high order.

14. 4241583 Lance Naik RAM JIWAN CHOUDHARY, The Guards.

(Posthumous)

On 22nd May, 1973, Lance Naik Ram Jiwan Choudhary was part of forward platoon of a company of an Infantry battalion which ws assigned the task of clearing the Lines of the armed personnel who had taken up arms and were fully armed and deployed in built-up areas. Lance Naik Choudhary was commanding a section of his company detailed to clear the Light Machine Gun post, which was firing from a building. The advance of the section was held up due to effective Light Machine Gun fire from the building. Seeing the number of casualties, he moved forward to silence the gun and when he was a few yards away from the post, he was fired upon from two sides. Though mortally wounded in his right arm, he continued to rush for the Light Machine Gun position. During his charge, he was hit by the Light Machine Gun burst the second time, but he shot the gunner and silenced the Light Machine Gun in the same motion. He continued to inspire his men inspite of being seriously wounded and succumbed to his injuries a few minutes later.

In this action, Lance Naik Ram Jiwan Choudhary displayed exemplary courage and devotion to duty.

15. 1180053 Lance Naik SUNDAR, Artillery.

The Medium Regiment, with which Lance Naik Sundar was serving, was given the task of disarming a battalion of armed personnel on 22nd May 1973. Approximately 300 men had taken up arms and were putting up a well-organised resistance by firing rifles and Light Machine Guns on the men of the Artillery Regiment. Two platoons were completely pinned down under heavy and accurate small arms fire. There were three severely wounded other ranks lying in the nallah running along the road. They could not be evacuated on account of heavy and accurate hostile fire. Lance Naik Sundar was the driver of the Column Commander's Jonga. When all efforts to evacuate the three wounded other ranks failed, he, with complete disregard to his personal safety, drove the Jonga to the spot where the casualties were lying and under the cover of the Jonga, quickly lifted the three wounded other ranks and put them in the vehicle. Although the Jonga was riddled with bullets and he had received a bullet injury on his right forearm, he managed to reverse the vehicle and rushed the casualties to the Civil hospital.

In this action, Lance Naik Sundar displayed exemplary courage, initiative, and devotion to duty.

16. 3966208 Sepoy BALBIR SINGH, Dogra Regiment.

Sepoy Balbir Singh was a member of a 'Stop' party detailed to apprehend a group of hostiles, reported to be camping at a place in Mokokchung District in Nagaland. The area was covered with tall elephant grass, which restricted visibility. The 'Stop' party, therefore, deployed an observations post on a tree top, where Sepoy Balbir Singh was detailed. On 5th May, 1973, after being in position for four hours, he noticed some movement in the thick elephant grass at some distance. The movement was in the direction going away from the position of our own troops. After alerting his comrades by a pre-arranged field signal, he climbed down from the tree and accompanied by another Sepoy waiting below, immediately rushed towards the place of movement lest the persons hidden should by-pass the position of 'Stop' party and thus escape. He had hardly gone a few yards when he was confronted by two of the hostiles. The leading hostile was carrying a loaded gun but before he could open fire, Sepoy Balbir Singh opened fire with his Carbine Machine Gun from hip position, killing that hostile instantaneously. The other hostile was also hit but he managed to escape by jumping into a nallah. In this encounter, a good deal of arms and some important documents of Naga hostiles were also seized.

In this action, Sepoy Balbir Singh displayed courage, initiative and devotion to duty.

17. 4246647 Guardsman MADHU MURMU, The Guards.

Guardsman Madhu Murmu was a light machine gun number one of a forward section of a platoon of an infantry battalion, which was assigned the task of capturing the western complex of an armoury on 22nd May 1973, which involved fighting in built-up areas where some armed personnel were fully entrenched in the buildings. The advance of the platoon was held up on account of the effective light machine gun fire from the building west of the armoury. Disregarding personal safety, Guardsman Madhu Murmu moved forward towards the buildings from where these personnel were bringing down effective automatic and rifle fire, and then climbed the building alone with his light machine gun and with his accurate and sustained fire killed both the light machine gunners and thus silenced their guns. He then engaged the others, who were firing from the armoury most effectively, thus making way for his platoon to advance and capture the armoury.

In this action, Guardsman Madhu Murmu displayed courage, determination and devotion to duty.

18. 5340213 Rifleman INDER BAHADUR THAPA, Gorkha Rifles.

A battalion of the Gorkha rifles, with which Rifleman Inder Bahadur Thapa has been serving, was assigned the task of disarming a battalion of armed personnel during the disturbance created by them. The battalion was also ordered to capture their well guarded armoury. On 22nd May 1973, the battalion was successful in making these men to lay down their arms. A seize of the armoury was then laid but the presence of 400 personnel armed with lethal weapons prevented the troops from disarming the armoury guards. Any fire would also have resulted in unwanted casualties and, therefore, the troops were put to much of restraint for a long time despite provocations from the other side. In the meantime, 500 more men from outside also joined them. It was at this time that the troops had to go into action for fear of the mob opening to the armoury by force, which would have been dangerous. A section of the company with which Rifleman Inder Bahadur Thapa was associated, made an assault on the armoury at 2030 hours on 22nd May, 1973. Rifleman Thapa rushed forward and assaulted the guard in the guard room who had already fired twice at him injuring him in his left thigh. Despite the injury and profuse bleeding, he, with complete disregard of his personal safety, dashed forward and caught hold of the guard, who was just to fire yet another round at him. This led to the capture of the armoury and finally in the breakdown of resistance by 900 personnel assembled there.

In this action Rifleman Inder Bahadur Thapa displayed courage, determination and devotion to duty.

19. 1250771 Gunner (Driver MT) KRISHNA REDDY, SHESHPTHIRI, Artillery.

Gunner (Driver Krishna Reddy Sheshpthiri has been serving with a Medium Regiment of Artillery, which was assigned the task of disarming a battalion of armed personnel during the disturbance created by them. The unit took up the task on 22nd May, 1973 and had to face resistance from nearly 300 men armed with rifles and light machine guns. The Platoon in which Gunner (Driver Sheshpthiri was serving had to face accurate small arms fire. When one of the other ranks while rushing from one position to another was seriously wounded by a light machine gun burst in the abdomen and fell down in open completely exposed to the hostile fire, despite grave personal risk, Gunner Sheshpthiri immediately rushed out of his covered position, picked up the wounded other rank and rushed back to the covered position. While performing this gallant act, he was hit in the thigh by a bullet but he managed to bring his injured comrade to a safe position from where both of them were evacuated to the hospital.

In this action, Gunner (Driver) Krishna Reddy Sheshpthiri displayed courage, initiative and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

20. 124483 Gunner (ORA) SAUARIMUTHU SWAMIDASS,

Artillery.

The medium regiment with which Gunner Sauarimuthu Swamidass has been serving was given the task of disarming a battalion of armed personnel on 22nd May 1973 during the disturbance created by them. Approximately 300 men had taken up arms and put up a well organised resistance by firing rifles and Light Machine Guns on the troops. Two platoons were completely pinned down under heavy and accurate small arms fire. One other rank was hit by a bullet in his chest and was lying unconscious in the open. Gunner Swamidass, with complete disregard for his personal safety and in the face of imminent danger, rushed out of the cover behind which he had taken up position, picked up the wounded other rank and rushed back for the cover of the nullah running along the road. While doing so, he was hit by a bullet in the elbow, but despite his injury he managed to bring his comrade to a safe position from where both were subsequently evacuated to the hospital.

In this action, Gunner Sauarimuthu Swamidass displayed courage, initiative and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

No. 104-Pres/75.—The President is pleased to approve the award of the "NAO SENA MEDAL"/"NAVY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty and courage :—

1. Commander KADRI MANJUNATH (X), (00151 T), Indian Navy.

On 12th October 1973, due to heavy floods in the river Burabalanga, the embankment on its right bank was in the danger of being breached. On request by the Civil authorities for assistance, Commander K. Manjunath, along with a party of 2 officers and 30 Jawans, proceeded to the river bank and worked ceaselessly for over six hours to protect the bound. As the task was found to be beyond control, it was given up. While returning he found 2 women and 5 children perched precariously on top of a sinking mud-hut about half a mile away from the embankment, in the mid stream of the flooded area. The flood water had already caused a wide breach in the approach road to the embankment. Realising that the lives of the women and children were in peril, Commander Manjunath, in utter disregard to personal safety along with 2 officers and 7 jawans, swam across the entire stretch of water with the help of improvised rafts, and rescued the women and children in three shifts. With the river rising steadily and darkness closing in, he performed this arduous and meritorious act without any gadgets for crossing a fast flooding water.

In this action, Commander K. Manjunath displayed courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

2. Commander DEVENDRA KUMAR YADAV (X), (00280K) Indian Navy.

Commander Devendra Kumar Yadav was commissioned in the Navy in January 1957. In May 1959, he volunteered for Naval Aviation. On successful completion of the flying training, he was awarded the Pilot's wings in May 1961.

Cdr. Yadav joined a Naval Fighter Squadron and by his sheer hard work and determination was among the first officers to qualify on the deck During his tenure in the Squadron on board the Aircraft carrier, the officer showed great promise as a Fighter Pilot. He completed Helicopter Conversion in July 1967 and since then has been flying the rotary wing aircraft. On completion of a tenure of a Flight Commander of a S.A.R. Flight on Indian Naval Ship VIKRANT, he was selected for an Anti-Submarine Helicopter Squadron and was selected for deputation to the United Kingdom. During the operations in 1971, he flew the helicopters with great professional skill and dedication to duty. Commander Yadav was subsequently appointed Commanding Officer of the Helicopter Training School and in this capacity, he was responsible for the successful completion of two courses and standardising the Helicopter training in the Navy.

Throughout, Commander Devendra Kumar Yadav displayed professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

3. Lieutenant Commander SATINDER KUMAR OBEROI (X) (00395-Y)

Indian Navy.

On the morning of 19th June 1973, Indian Naval Ship BETWA was sent to render assistance to COSMOS PIONEER, a tanker which was in distress after running aground. The sea on that date was extremely rough with a 15-20 feet height of waves. At about 0715 hours, the Ship lowered her sea boat for closer examination of the COSMOS PIONEER and to ascertain the presence of any member of crew on board that ship. Lieutenant Commander Satinder Kumar Oberoi, the Executive Officer of Indian Naval Ship BETWA., volunteered to take charge of the sea boat. Whilst the sea boat was being hoisted, the strong waves started lashing the boat and tossing her in all directions. The boat was continuously banging against the ship's side and the boat's crew were being subjected to severe jolts. Meanwhile, Lieutenant Commander Oberoi's right hand was seriously injured. However, inspite of the agonising pain, he remained calm and continued to concentrate on the safety of the boat and the crew with undivided attention. He managed to send 4 members of the crew on board by climbing life-lines in a most orderly manner. When due to continuous heavy banging against the ship's side, the boat broke into two and the bowman fell overboard, the officer immediately threw a life-buoy to him. He also helped the stern-sheet-man CHIRAT SINGH, Seaman First Class, to climb up the jacobs ladder. In the process, he himself was washed overboard and engulfed by huge waves which carried him away out of sight of the ship. However, the officer maintained his wits, confidence, courage and determination and swam safely to a village 4 miles away. He contacted the local authorities and lost no time in informing the Naval authorities about his survival by the quickest possible means, thereby saving a tremendous search and rescue effort.

The exceptional qualities of courage, leadership, determination and devotion to duty displayed by Lieutenant Commander Satinder Kumar Oberoi are in the highest traditions of the Indian Navy.

4. Lieutenant Commander PIYUSH JHA, (00526W) Indian Navy

Lieutenant Commander Piyush Jhat was commissioned in the Indian Navy in July 1963, and qualified as a pilot in May 1965. In a short period of 8 years only he has accumulated to his credit a total of about 2,400 flying hours and is the Senior Pilot of the Naval Helicopter Training School. After many successful tenures of duty in frontline flying, he was selected to undergo the Flying Instructors Course and qualified as a QFI in June 1971. Thereafter, he carried out instructional duties in the Air Force Flying College. He was then appointed to the newly commissioned Naval Helicopter Training School where he has put in commendable and sustained effort to convert young pilots for helicopters. In little over one and a half years, he has flown more than 1,200 hours of instructional flying. Often he has logged over 90 hours in a single month In fact he has been largely instrumental in converting over 20 pilots for helicopters in this short period and has greatly helped in establishing the Helicopter Training School as a highly organised and smooth running unit.

Throughout, Lieutenant Commander Piyush Jha displayed professional skill, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

5. MUTHAN KALIAPPAN, Leading Air Diver, 82871, Indian Navy.

Muthan Kaliappan, Leading Air Diver, joined the Navy in July 1964. While borne on board a Naval Ship during the period from April 1971 to February 1973, he flew for 395 hours in 680 sorties in Naval Helicopters Besides logging 30 hours for harbour patrol and in search of survivors, he carried out 5 jumps during various demonstrations and rescue operations. He has also flown under adverse weather conditions involving risk to his life in evacuating casualities from a merchant ship. He also gave commendable account of himself in carrying out diving duties in the Eastern Sector.

Throughout, Shri Muthan Kaliappan displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy

6. JOGINDER SINGH Engineering Mechanic Second Class (96454) Indian Navy.

On 19th June, 1973, in spite of the prevailing heavy weather Joginder Singh, Enginering Mechanic Second Class, volunteered to join the crew of the Sea Boat as a driver. The sailor tended the engine although he himself was sea sick and kept the engine running till ordered to cut engine. After stopping the engine, the sailor was preparing to climb the life line, when he found that the coxswain and anothe Seaman in the stern of the boat were experiencing great difficulty in hooking on the after falls which were swinging dangerously. The sailor abandoned his life line and went to the aid of the officer, successfully helped to hook on the falls. In this operation, his left forearm was caught in the falls and was about to be broken from the elbow downwards. Only on receiving the order to abandon the boat, the sailor climbed up the jacobs ladder.

Joginder Singh, Engineering Mechanic, thus displayed courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Indian Navy.

K. BALACHANDRAN, Secy. to the President.

MINISTRY OF COMMERCE

New Delhi, the 14th August 1975

No. 4(1)/73-EPZ.—The Central Government hereby appoints Shri M. K. Kukreja, Joint Secretary, Department of Company Affairs, as a member of the Santa Cruz Electronics Export Processing Zone Board *vice* Shri Co. Balasubramaniam and makes the following further amendment in the Government of India (formerly) Ministry of Foreign Trade, Notification No. 16(2)/73-TAEP dated the 20th January, 1973.

In the said Notification, *for* the entry against S. No. 14 the following entry shall be substituted, namely :

"14. Shri M. K. Kukreja,
Joint Secretary,
Department of Company Affairs."

U. R. Kurlekar, Deputy Director.

MINISTRY OF INDUSTRY & CIVIL SUPPLIES
(DEPARTMENT OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT)

New Delhi, the 11th August 1975

RESOLUTION

No. 07011/3/72-Salt.—In continuation of the late Ministry of Industrial Development Resolution of even number dated the 7th October 1974, Government of India hereby appoint the following persons on the Central and Regional Advisory Boards for Salt :—

Members

A. *CENTRAL ADVISORY BOARD*

18. Shri K. Narayana Rao,
Member Lok Sabha,
Santha Narasipuram,
Veeraghattam PO,
Srikakulam District (AP).

Address at Delhi :—

123, South Avenue,
New Delhi.

B. *REGIONAL ADVISORY BOARDS*

Tamil Nadu

9. Shri C. Chitti Babu,
Member Lok Sabha,
24, Nagappa Iyer Street,
Triplicane,
Madras-5

Address at Delhi :—

28, North Avenue,
New Delhi.

Andhra Pradesh

7. Shri P. V. G. Raju,
Member Lok Sabha,
Pool Bagh Palace,
Vizianagaram-2 (AP)

Address at Delhi :—

C-1/16, Pandara Park,
New Delhi.

8. Shri M. Ankineedu,
Member Lok Sabha,
Gudivada, Krishna District, (AP)

Address at Delhi :—
7, Ferozeshah Road,
New Delhi.

West Bengal

4. Shri Ram Bhattacharjee,
Sitalatala,
Bhadreswar PO
Hooghly Dt. (WB).

7. Shri Madhuryya Haldar,
Member Lok Sabha,
Teachers' Qrs.,
Sarisha PO,
24-Parganas Dt. (WB)

Address at Delhi :—

408, Vithalbhai Patel House,
New Delhi.

Orissa

4. Shri K. N. Pathak,
Joint Secretary,
Gangpur Labour Union,
Birmitrapur PO,
Surendranagar Dt. (Orissa)

7. Shri Chintamani Panigrahi,
Member Lok Sabha,
Santarapur,
'Sri Ma Nibas'
Bhubaneswar (Orissa)

Address at Delhi :—

109, North Avenue,
New Delhi.

8. Shri Lakshmana Mahapatra,
Member, Rajya Sabha,
Chatarapur PO
Ganjam Dt. (Orissa)

Address at Delhi :—

9, South Avenue,
New Delhi.

Maharashtra

7. Shri D. S. Patil,
Member, Rajya Sabha,
LONI PO, Darwha Taq.
Yeotmal Dt. (Maharashtra)

Address at Delhi :—

58, South Avenue,
New Delhi.

8. Shri S. A. Kader,
Member Lok Sabha,
17, Rahmat Manzil,
Veernariman Road,
Bombay-20.

Address at Delhi :—

18, Ferozeshah Road,
New Delhi.

Gujarat

7. Shri D. P. Jadeja,
Member, Lok Sabha,
Sajjan Niwas,
Bedi Road,
Jamnagar (Gujarat)

Address at Delhi :—

101-103, South Avenue,
New Delhi.

8. Smt. Kumudben Manishanker Joshi,
Member, Rajya Sabha,
Changa Dhanor,
Gandevi PO,
Bulsar Dt. (Gujarat)

Address at Delhi :—

183, South Avenue,
New Delhi.

Rajasthan

9. Shri Nathi Singh,
Member, Rajya Sabha
Vakil Colony,
Neemda Gate,
Bharatpur (Rajasthan)

Address at Delhi :—

228, North Avenue,
New Delhi.

ORDER

ORDERED that this RESOLUTION be communicated to all State Governments, all Ministries of the Government of India, Planning Commission, Cabinet Secretariat and Prime Minister Secretariat.

2. ORDERED also that this RESOLUTION be published in the Gazette of India, Part I, Section 1.

R. RAMANUJAM, Under Secy.

MINISTRY OF RAILWAYS
(RAILWAY BOARD)

New Delhi, the 11th August 1975

RESOLUTION

No. ERBI/73/21/40.—In continuation of Ministry of Railways (Railway Board)'s Resolution No. ERBI/73/21/40 dated 30th August 1973, the Government of India have nominated Shri M. A. Naidu as a Member of the Standing Voluntary Help Committee in place of Shri H. M. Pandit, who has resigned from the membership of the said Committee.

A. L. GUPTA, Secy.
& *ex-officio* Jt. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1975